Roll No. ..... Total Pages: 04

6612

B. A./B. Ed. Part – I (Integrated) Examination, 2019

HINDI – II

(गद्य)

Time: Three Hours

Maximum Marks: 80

PART – A (खण्ड – अ) *[Marks: 20]*

All questions are mandatory.

*The answer to each question should not exceed **50** words.*

*Each question is of **2** marks.*

*सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **50** शब्दों से अधिक न हो।*

*प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।*

PART – B (खण्ड – ब) *[Marks: 30]*

*Answer **five** questions selecting one from each unit.*

*The answer to each question should not exceed **250** words.*

*Each question is of **6** marks.*

*प्रत्येक इकाई से **एक–एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्न कीजिए।*

*प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **250** शब्दों से अधिक न हो।*

*प्रत्येक प्रश्न **6** अंक का है।*

PART – C (खण्ड – स) *[Marks: 30]*

*Answer any **three** questions.*

*Answer should not exceed **300** words. Each question is of **10** marks.*

*कोई **तीन प्रश्न** कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **300** शब्दों से अधिक न हो।*

*प्रत्येक प्रश्न **10** अंक का है।*

खण्ड – अ

प्र.1 सभी प्रश्न अनिवार्य है–

(i) आज़ादी की स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर किसके द्वारा विशेष रूप से कौनसा नाटक तैयार किया गया और नाटककार का नाम बताइए।

(ii) 4 सितम्बर 97, कानपुर से प्रकाशित 'हिन्दुस्तान' समाचार पत्र की नाटक के प्रति क्या प्रतिक्रिया की गई थी?

(iii) जीवन में मनोवेगो के अनुसार परिणामों का विरोध प्रायः तीन वस्तुओं से होता है – वे वस्तुएँ कौन–सी हैं?

(iv) 'गिलहरी' निबन्ध के निबन्धकार का नाम बताते हुए भारतीय गिलहरी को अंग्रेजी में, अमरीकी में व विदेशी लोग क्या कहते हैं?

(v) 'साहित्य में आत्माभिव्यक्ति' से क्या तात्पर्य है?

(vi) भ्रमरानंद किस निबन्धकार का छद्म नाम है? उनके प्रकाशित निबन्ध संग्रहों के नाम बताइए।

(vii) हिन्दी रंगमंच का जन्मदाता कौन–था? उनके प्रमुख नाटक बताइए।

(viii) जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटकों के नाम लिखिए।

(ix) ''यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी'' यह कथन किसका है? उनके प्रमुख निबन्ध कौन–कौन से हैं?

(x) ललित निबन्ध किसे कहते हैं? बाबू गुलाबराय के ललित निबन्ध कौन–कौन से हैं?

खण्ड – ब

इकाई – I

प्र.2 निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

दो कौमों का सिद्धांत असत्य है। ..... हिंदोस्तान के मुसलमान विभाजन पर जोर दें तो मैं अहिंसा का पुजारी होने के नाते उन्हें रोक नहीं सकता..... लेकिन यह एक कौम के रूप में साथ रहने के लिए अनगिनत हिंदुओं और मुसलमानों ने सदियों तक जो काम किये हैं..... उसे धूल में मिलाना है। .....मेरी आत्मा इस कल्पना के विरुद्ध बगावत करती है कि हिन्दुत्व और इस्लाम दो परस्पर विरोधी संस्कृतियों और सिद्धांतों के प्रतिनिधि हैं।

अथवा

इधरवाले कहते हैं .....ये तुम्हारा मुल्क नहीं है, उधर जाओ। .....उधरवाले कहते हैं, दफ़ा हो जाओ..... ये मुल्क तुम्हारा नहीं है। .....इधर वाले कहते हैं ये हिंदुओं का है। .....उधरवाले कहते हैं, ये मुसलमानों का है। (फफककर रो पड़ता है।) न मैं मुसलमान हूँ .....न मैं हिंदू हूँ। .....मैं तो एक इंसान हूँ। ..... फिर .....इन्सानों का मुल्क कौन–सा हुआ? .....मैं कहाँ जाऊँ? .....इन्सान कहाँ जाएँ? ..... (चीख कर) अरे कोई तो बताओ भय्या! .....मैं कहाँ जाऊँ?

इकाई – II

प्र.3 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

उसे विस्तृत मानव परिवार को ममता देती है। इतना ही नहीं यदि मंगलग्रह निवासियों को विज्ञान खोज ले, तो उन्हें भी उसकी ममता की आवश्यकता पड़ सकती है और ममता श्रद्धामय आत्मदान है।

ममता जिस प्रकार आस्था के बिना अपने रक्त से सन्तान का सृजन नहीं कर सकती, धरती जिस प्रकार ऋत् के बिना अंकुर को विकास नहीं दे सकती, साहित्यकार भी उसी प्रकार गम्भीर विश्वास के बिना अपने जीवन को अपने सृजन में अवतार नहीं दे पाता।

अथवा

शिशु की शिक्षा भी इसी तरह होती है, प्रीतिकर और अप्रीतिकर परिणामों से ही उसे कर्माकर्म का बोध होता है। मनोवैज्ञानिकों का एक सम्प्रदाय यह भी कहता है कि नैतिक बोध – उचितानुचित विवेक – इससे अधिक कुछ नहीं है। लेकिन मानव का अहं इस मत को स्वीकार करना नहीं चाहता; पशु को साधा जाता है, ठीक है; शिशु भी पशुवत होता है, अच्छा; लेकिन वयस्क मानव के लिए नीति का आधार – नैतिकता का स्त्रोत – इससे गहरा कुछ होना चाहिए क्या? न सही आत्मा; विवेक सही, बुद्धि सही; क्या जीव विकास में पशु से मानव बनने का अभ्यन्तर प्रभाव कुछ भी नहीं हैं? क्या यह दावा भी अहंकार ही है कि नैतिक बोध ही मानव को इतर जीवों से पृथक् करता है।

इकाई – III

प्र.4 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

यहाँ स्वर्ण का तिरस्कार्य नहीं, बल्कि आहत शेष की लाचारी है। ईश्वर न सही, पर उसकी जगह भरने वाला लोकतंत्र इतना क्षमतावान होता है कि वह अपने में आस्था को जन्म दे सके, तो भारतीय बुद्धिजीवी आहत क्रोध की इस लाचारी को न भोगता। भारतीय बुद्धिजीवी ने द्रोणाचार्य की तरह अभी तक ईमान नहीं बेचा है और हाथों का सौदा नहीं किया है। पर वह लाचारी भोग कर दिन पर दिन अपना आत्मक्षय कर रहा है। यह एक 'ट्रेजेडी' है। लोकतंत्र में वरण–स्वातन्त्र्य है। वह वरण करता है। पर सन्दर्भ ऐसा है कि वरण अर्थहीन हो जाता है।

अथवा

तो क्या कहूँ, यही तो एक कांटा है, जो बराबर चुभता रहता है, लाख कोशिश करने पर भी निकलता नहीं। मैं भूलना चाहता हूँ कि कुछ हूँ, क या ख या ग, क्योंकि क हूँ, तब भी दारूण विपत्ति, ख या ग हूँ, तब भी संकट। कुछ कहा जाये, इससे तबीयत बड़ी घबराती है, क्योंकि कुछ कहा जाने का मतलब होता है और कुछ न कहा जाना और इसके लिए आज का संशयालु चित्त तैयारी नहीं है, क्योंकि उसमें साहस नहीं है कि कह सके मैं यह नहीं हूँ।

इकाई – IV

प्र.5 नाटक के तत्वों की चर्चा कीजिए।

अथवा

प्रसादोत्तर हिन्दी नाटककारों के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

इकाई – V

प्र.6 निबन्ध की परिभाषा एवं विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

भारतेन्दु युगीन निबन्धकारों का परिचय दीजिए।

खण्ड – स

प्र.7 'अलख आज़ादी की' में विदुषक का चरित्र चित्रण कीजिए।

प्र.8 'देवदारू' निबन्ध के कथ्य व शिल्प की विवेचना कीजिए।

प्र.9 'तुलसी के सामाजिक मूल्य' निबन्ध के माध्यम से डॉ. राम विलास शर्मा ने किन मूल्यों की ओर ध्यान आकर्षित किया है स्पष्ट कीजिए।

प्र.10 हिन्दी नाटक एवं रंगमंच के विकास की रूपरेखा स्पष्ट कीजिए।

प्र.11 हिन्दी निबन्ध उद्‌भव–विकास यात्रा की विवेचना कीजिए।